रंगमोहल उतर दिशा की शोभा

पुखराज Overview

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

➢ पुखराज पहाड़ की शोभा

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

सुख लीजो मोमिन, पहाड़ मोहोल के आराम ।
अर्स अजीम के कायम, निस-दिन एही ताम[१] ।।१।।

हौज जोए अर्स जिमिएं, जो फुरमान में फुरमाए ।
पहाड़ मोहोल पेड़ इनका, सो हक हुकमें देऊं बताए ।।२।।

एक जवेर इन जिमी पर, बीच अर्स एक नंग ।
बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग ।।३।।

सो बड़ा पहाड़ एक नंग का, तिनमें कई मोहोलात ।
चौड़ा ऊंचा तेज में, क्यों कहूं अर्स की बात ।।४।।

गिरद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा ।
मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा ।।५।।

गिरदवाए फेर देखिए, आकास न माए झलकार ।
मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार ।।६।।

ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुंदर ।
न्यारी नजर न होवहीं, चुभ रह्या रूह अंदर ।।२१।।

अति बड़े सुभट सूरमें, सेन्यापति सिरदार ।
मेला होत है इन मोहोलों , कई जातें जिनसें अपार ।।२२।।

रूहें राज स्यामाजी बिराजत, निपट सोभा है इत ।
ऊपर तले बीच सुन्दर, खूबी-खुसाली[२] करत ।।२३।।

ए जवेर अर्स जिमी के, सब्द में न आवत ।
ए मोमिन देखो रूहसों, जुबां न पोहोंचे सिफत ।।८५।।

नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए ।
अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए ।।८६।।

जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन ।
ऊपर तले मांहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन ।।८७।।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत ।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत ।।८८।।

परमधाम विहार

कृष्ण पक्ष (वद)	
अष्टमी	पुखरज पहाड़ की तलहटी
नवमी	पुखरज पहाड़ की हजार हांस की चादनी
दसमी	पुखरज पहाड़ का आकाशी महल
एकादशी	बंगलजी – पुखराजी ताल
द्वादशी	बंगलाजी
त्रयोदशी	अधबीच का कुण्ड'
चतुर्दशी	ढपो चबूतर , मूल कुण्ड

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा– पुखराज पहाड़ की शोभा

- पुखराज पहाड़
- पश्चिम की धाटी
- उतर की धाटी
- दक्षिण की नहेर
- बंगलाजी
- अधबीच का कुण्ड
- ढपो चबूतरा
- मूल कुण्ड

गिरद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा ।
मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा ।।५।।

खूबी इन पहाड़ की, ऊँचा माहें आकास ।
कई मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास ।।११।।

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

सुख क्यों कहूँ पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूँ मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते , मोहोल तीसरे तिन उपले ।।

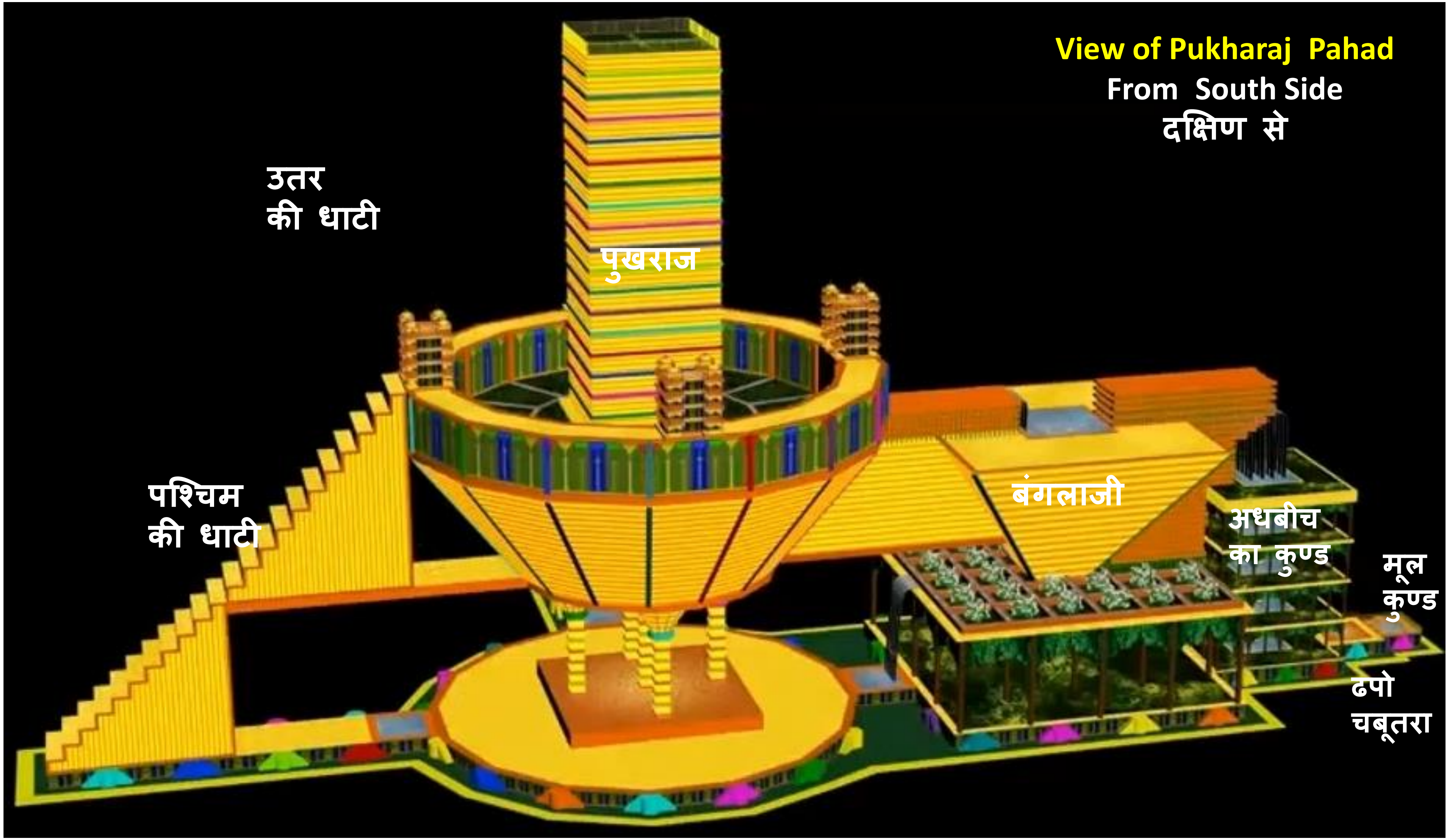

View of Pukharaj Pahad
From South Side
दक्षिण से
उतर
की धाटी
पुखराज
पश्चिम
की धाटी
बंगलाजी
अधबीच
का कुण्ड
मूल
कुण्ड
ढपो
चबूतरा

आकाशी महल
हजार हांस के महल
दिशा के बड़े दरवाजे
महावन
उत्तर की घाटी
लम्बा छज्जा
पश्चिम की घाटी
बंगले का चबूतरा
5 पेड़
पुखराज का चबूतरा
घाटी का चबूतरा
View of Pukharaj Pahad
From West Side
पचिम से

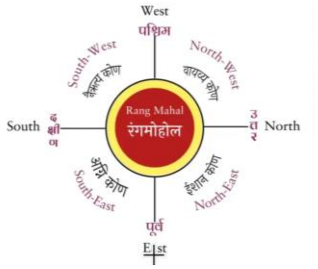

West
पश्चिम
North-West
North
North-East
East
पूर्व
South-East
South
South-West
Rang Mahal
रंगमोहोल

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

Drone View
पुखराज पहाड़ के आकासी
ताड़ वन

West
पश्चिम
North-West
वायव्य कोण
South-West
नैऋत्य कोण
South
North
Rang Mahal
रंगमोहोल
South-East
अग्नि कोण
North-East
ईशान कोण
पूर्व
East

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

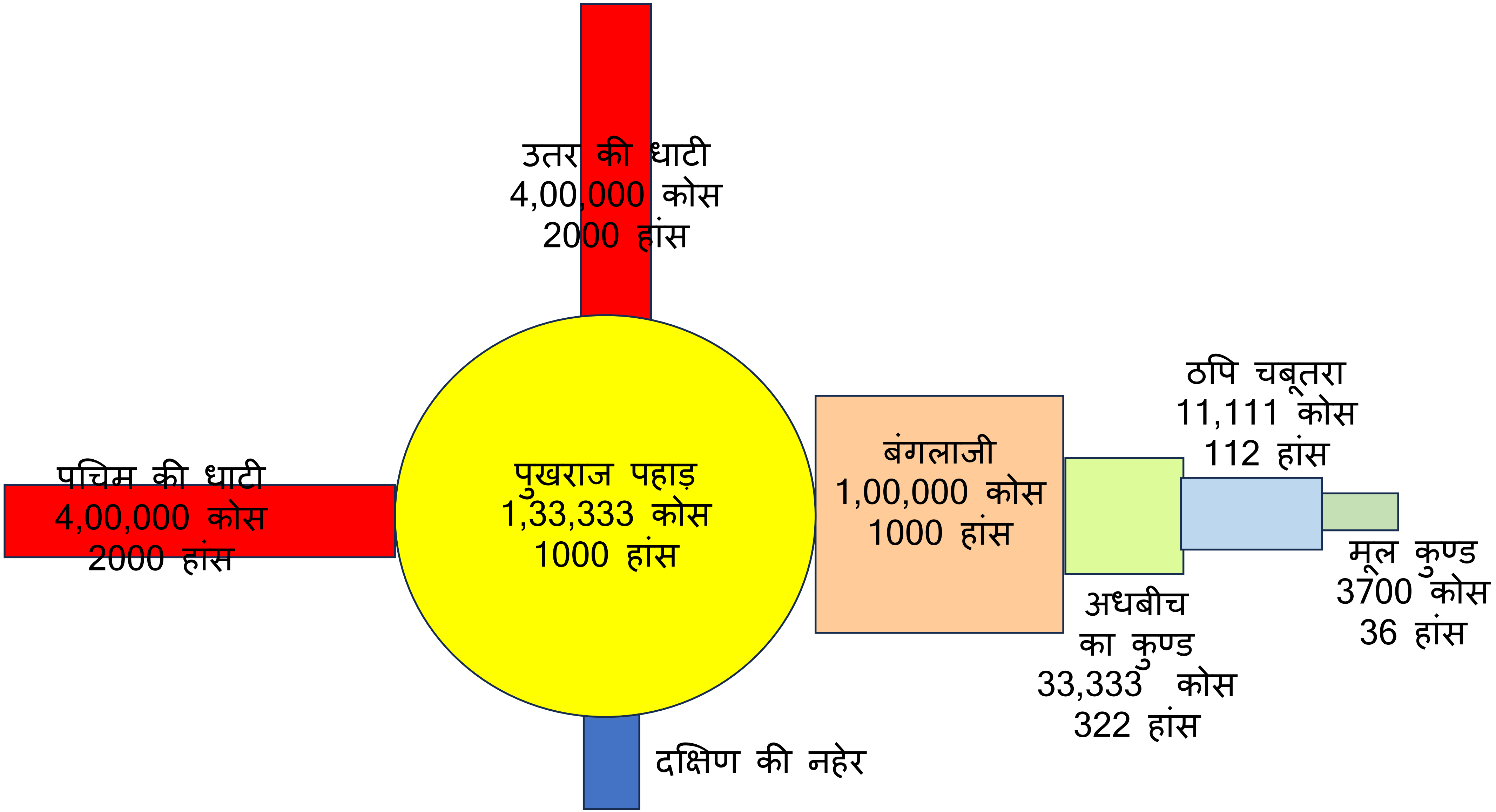
उतर की धाटी
4,00,000 कोस
2000 हांस
पचिम की धाटी
4,00,000 कोस
2000 हांस
पुखराज पहाड़
1,33,333 कोस
1000 हांस
बंगलाजी
1,00,000 कोस
1000 हांस
ठपि चबूतरा
11,111 कोस
112 हांस
अधबीच
का कुण्ड
33,333 कोस
322 हांस
मूल कुण्ड
3700 कोस
36 हांस
दक्षिण की नहेर

West
पश्चिम
North
South
East
पूर्व
Rang Mahal
रंगमोहोल

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

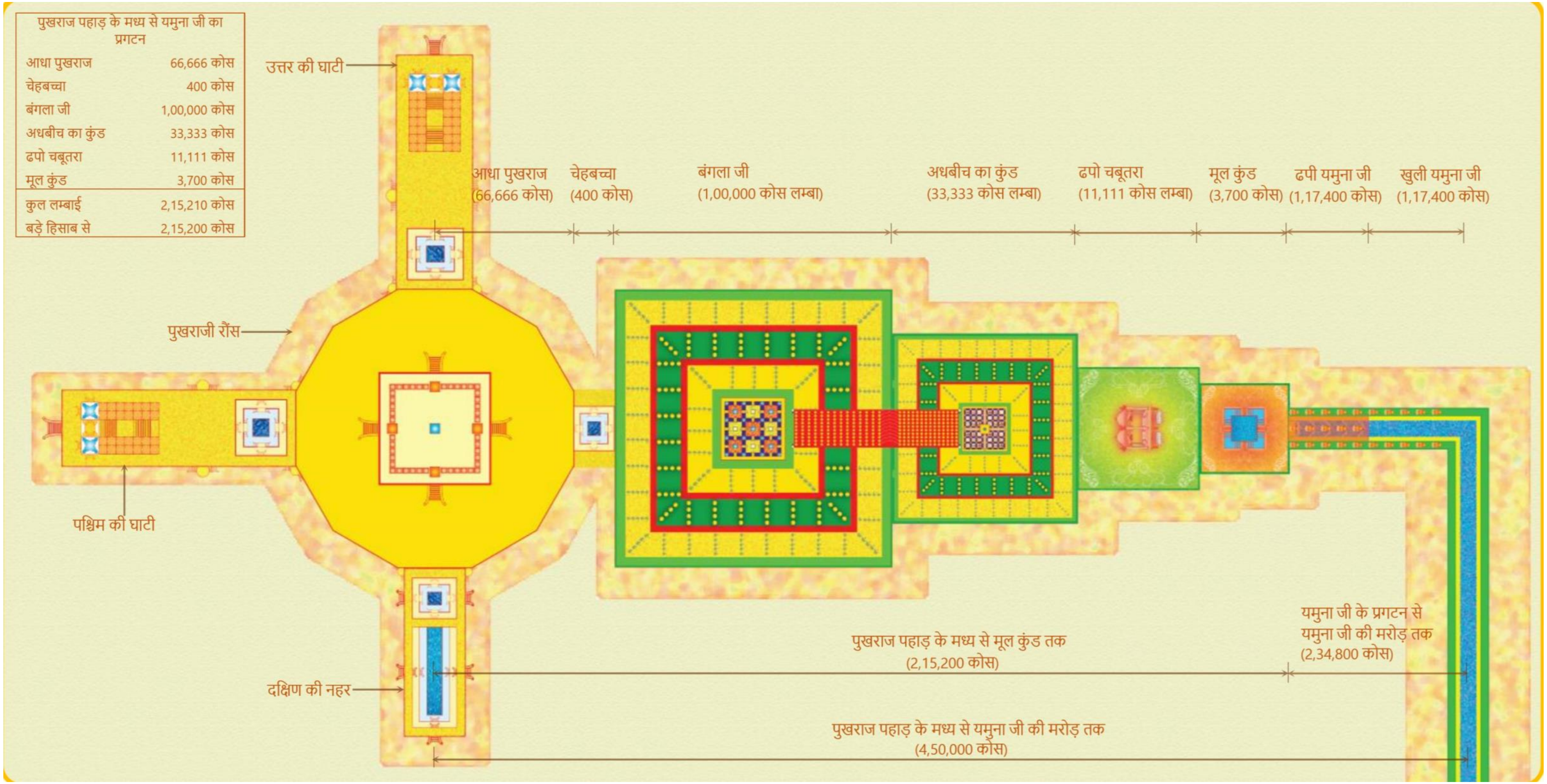

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

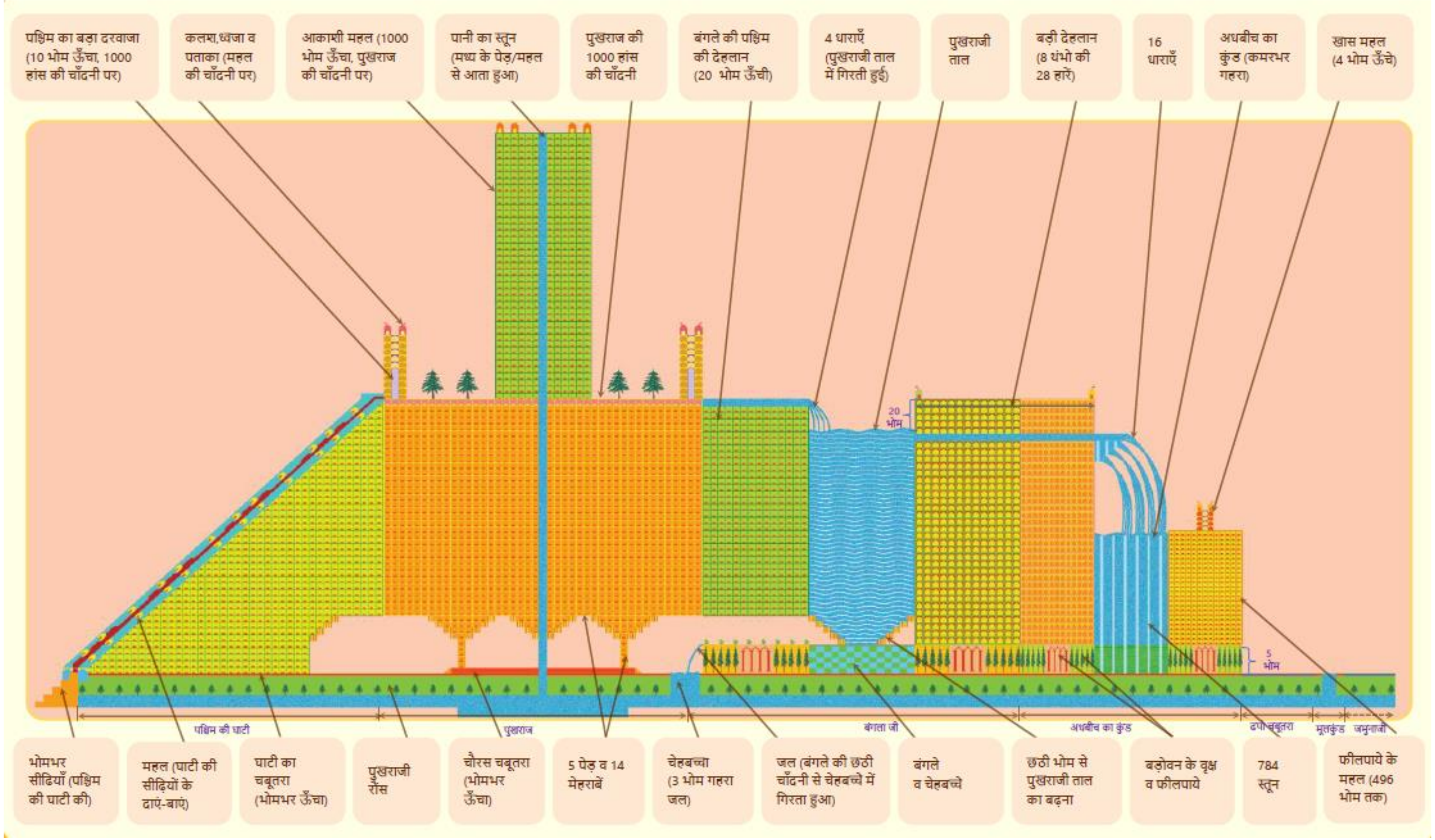

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

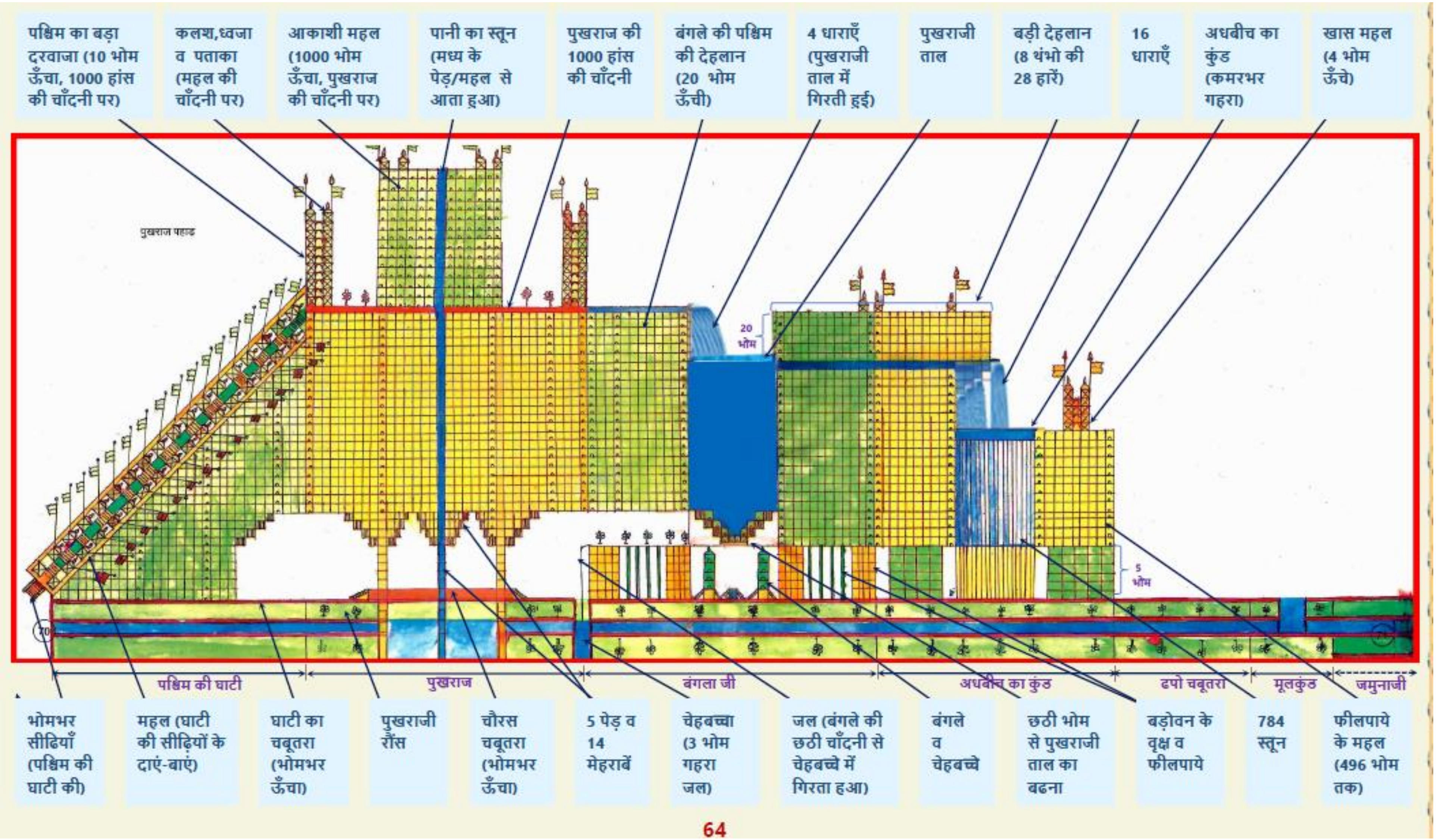

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

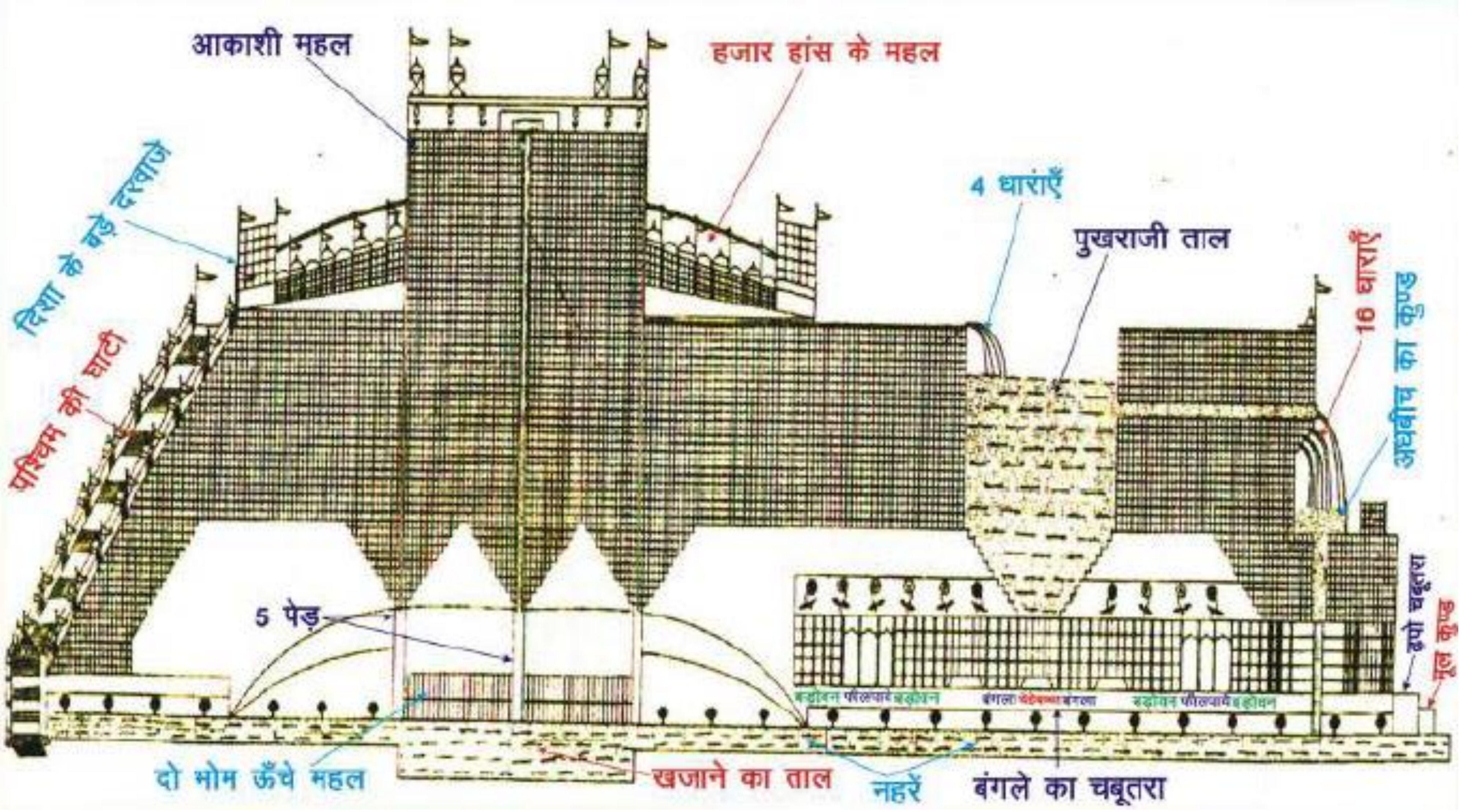

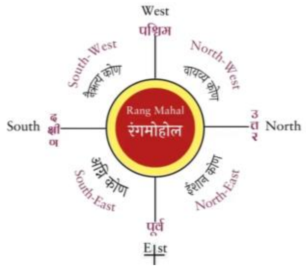

पुखराज पहाड़ में जल की प्रवाहें

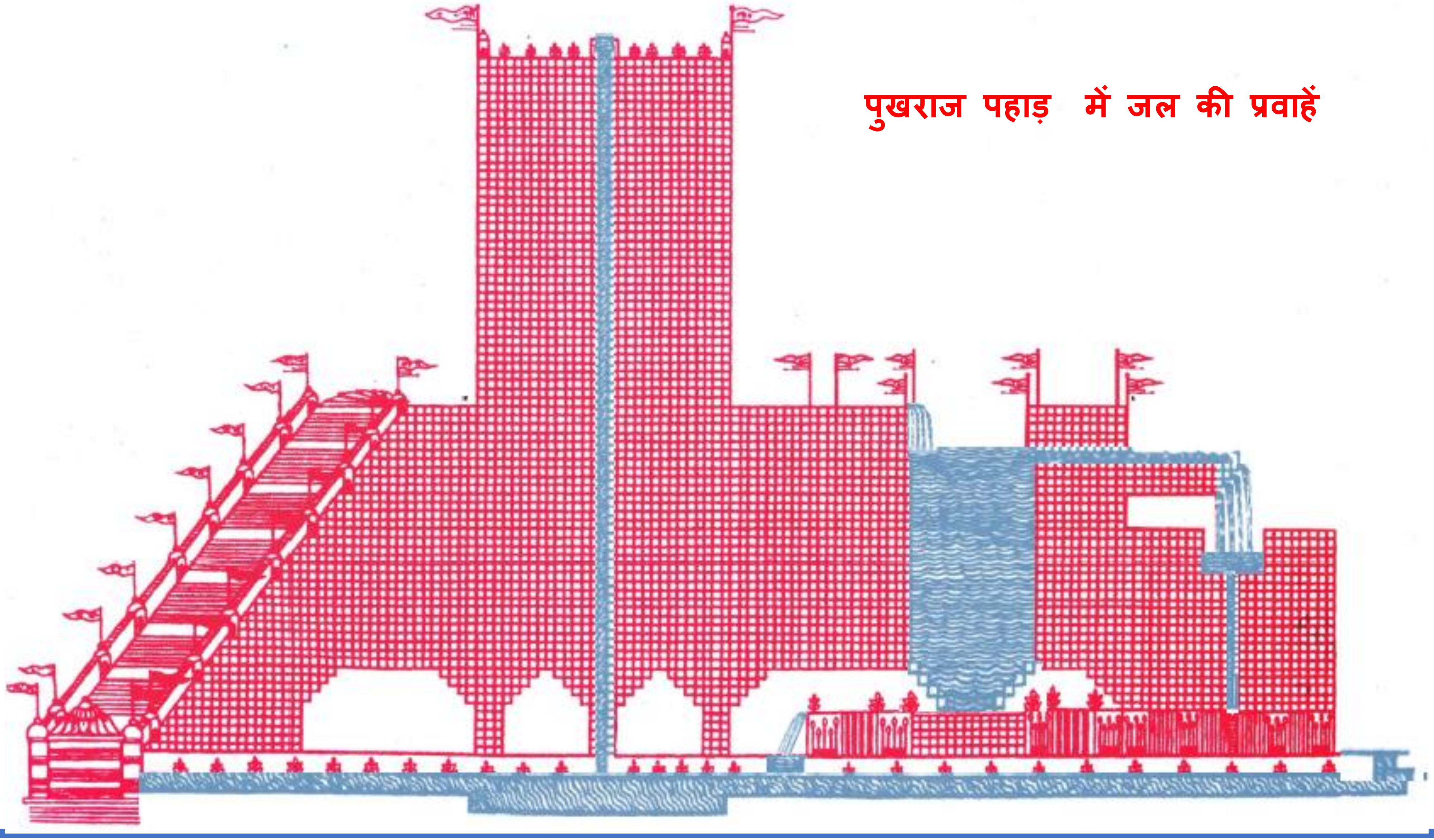

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

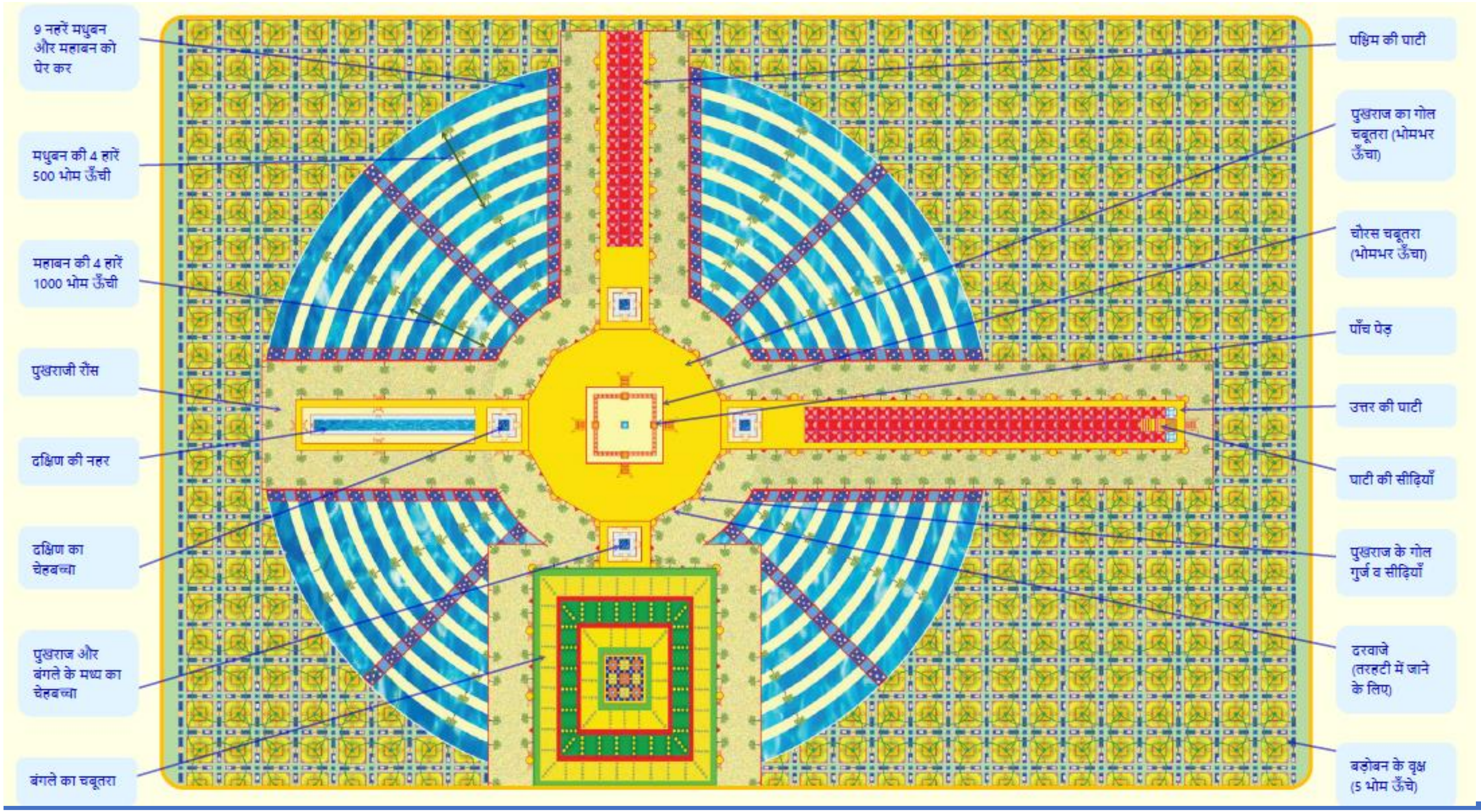

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

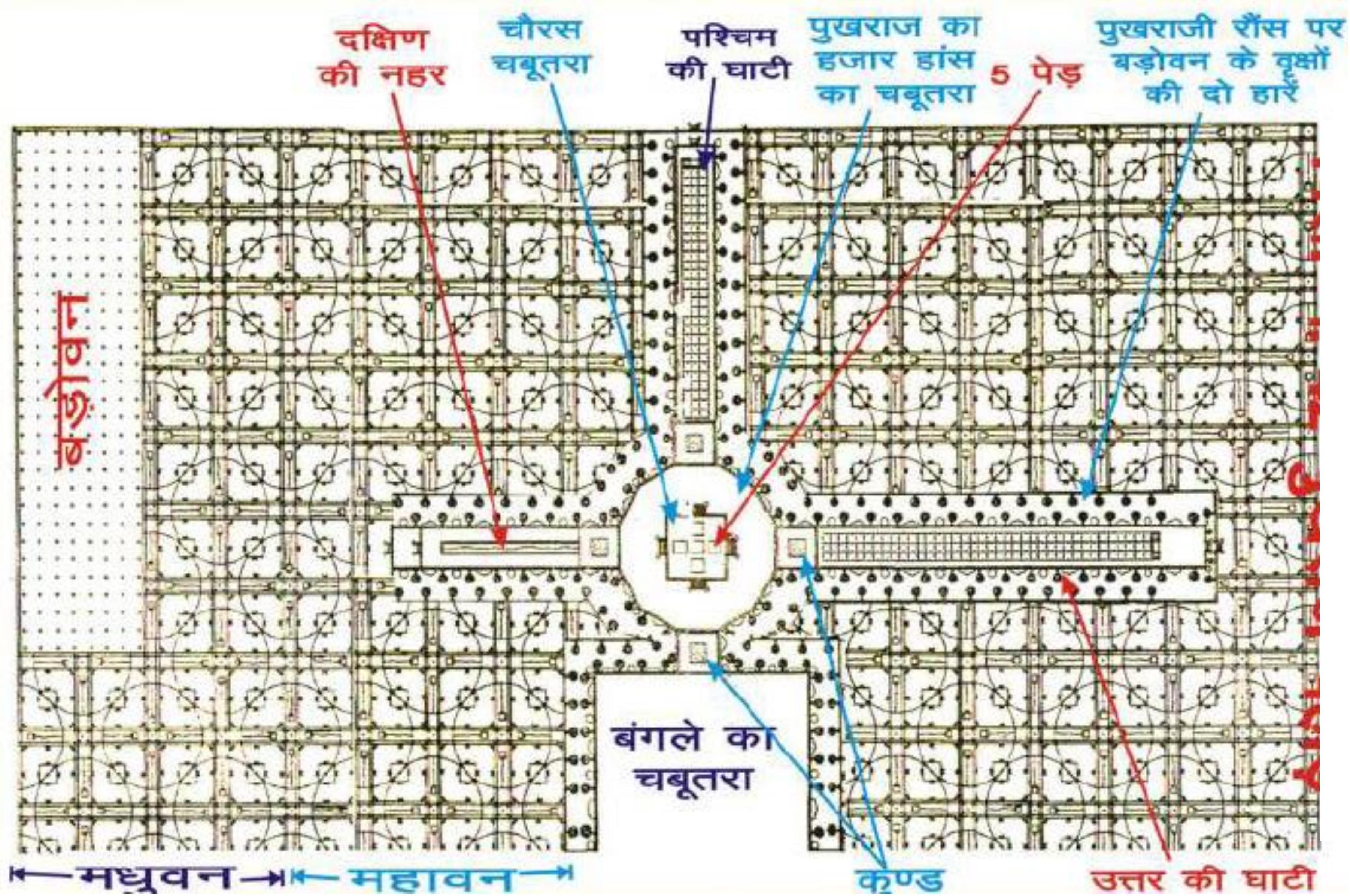

रंगमोहल उतर दिशा की शोभा – पुखराज पहाड़ की शोभा

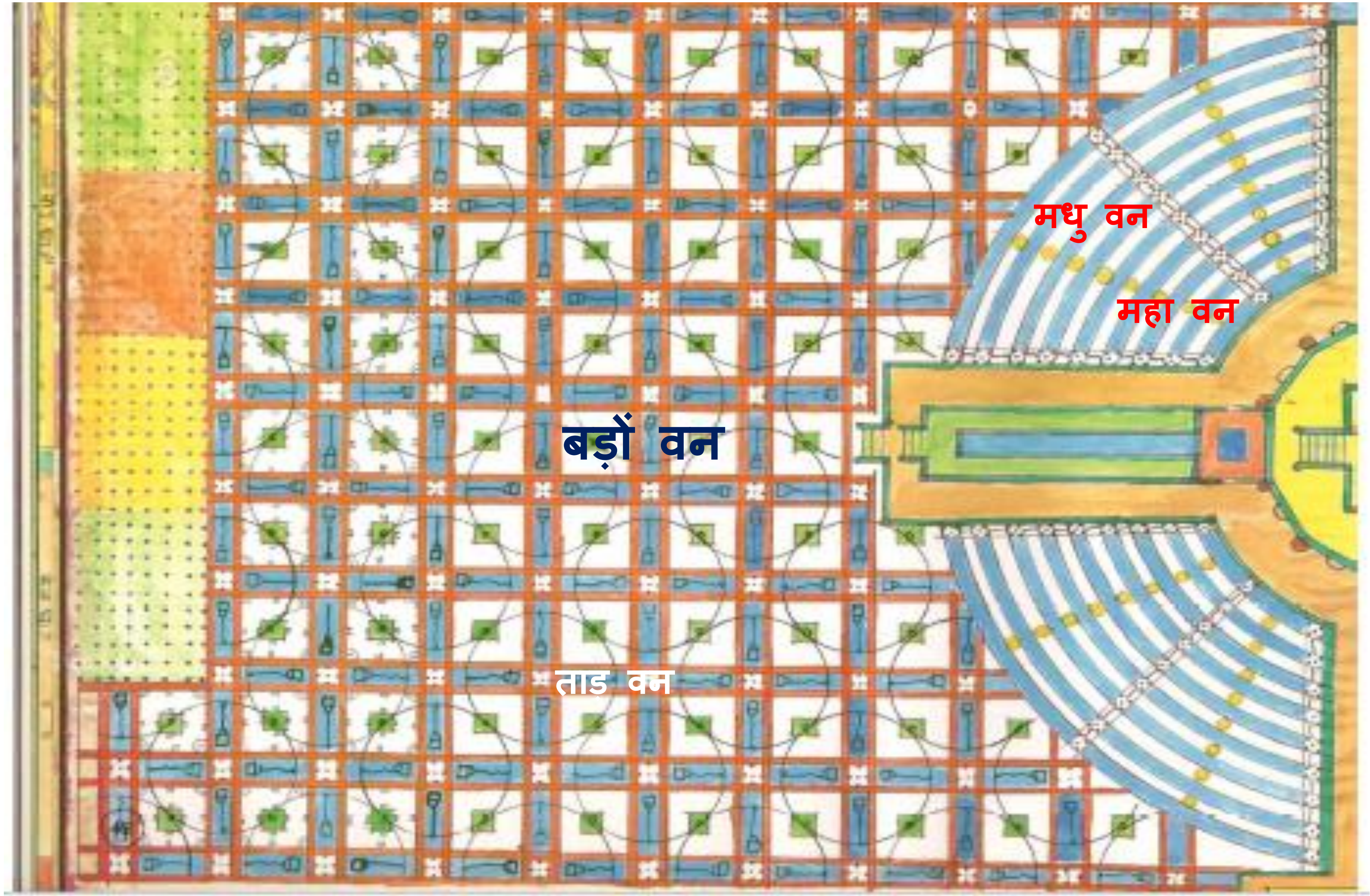

पूखराज पहाड़ की शेर & जल सीचण

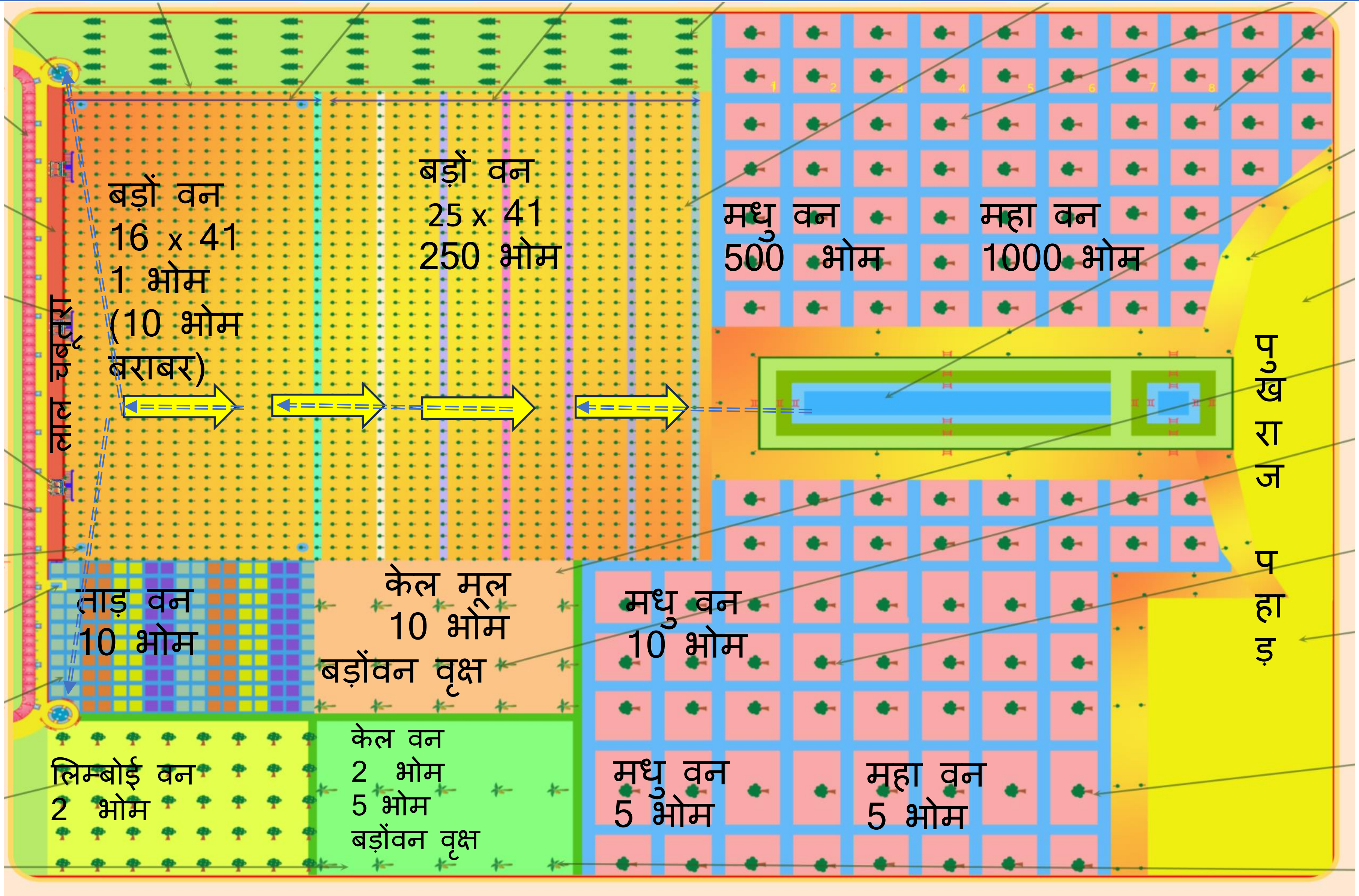

रंगमहल की उतर से पूखराज पहाड़ की शेर

पुखराज की दक्षिण की नहेर से जल सीचण

Sahoor

OR

Quiz